



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (B)
PART II—Section 3—Sub-Section (B)

प्राप्तिकार वं प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 52]

नई दिल्ली, बुधवार, जनवरी 24, 1996/माघ 4, 1917

No. 52] NEW DELHI, WEDNESDAY, JANUARY 24, 1996/MAGHA 4, 1917

लोक सभा संविधानसभा

प्रधिसूचना

नई दिल्ली, 22 अक्टूबर, 1996

का.आ. 65(प्र).—अध्यक्ष, लोक सभा द्वारा भारत के संविधान की दस्ती अनुसूची के अन्तर्गत दिया गया दिनांक 3 अक्टूबर, 1996 का निम्नलिखित सिद्धांत उत्तमाग्रधिसूचित किया जाता है:—

“भाजपा अध्यक्ष, लोक सभा के समक्ष

श्री अग्रिहि मिह

बनाम

आधिकारिक

1. श्री राम लक्ष्मण हिम्म हारदत्र
2. श्री रामशरण यादव
3. श्री अम्बेदकर मिह
4. श्री रामेश लाल
5. श्री गुलाम मोहम्मद खान
6. श्री अमरदिं चरण दाम
7. श्री गोविन्द चन्द्र मुंदा

प्रत्यर्थी

ऐसा भा या अनुकूल्य में, इस आधार पर, कि उन्होंने जनतादल (प्र) जिसके बैद्यत्य थे, की महस्त्यता अवैधिक रूप से छोड़ दी थी।

1. जनता दल के माफने में पहली जुलाई, 1993 को यह निर्णय हुआ कि 20 सदस्यों वाला जनता दल (प्र) जिसके नेता श्री अग्रिहि मिह है, प्रस्ताव में दाया भा। तथाप्यात् 28 जुलाई, 1993 को (सार्व 4.15 बजे) श्री राम लक्ष्मण सिह यादव ने उसी नियम का लक्ष्य तथा जनता दल (प्र) के 6 अन्य सदस्यों अग्रिहि मर्वनी रोशन लाल, अम्बेदकर मिह, गोविन्द चन्द्र मुंदा, राम शरण यादव, अनादि चरण दाम तथा गुलाम मोहम्मद खान द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र सौंपा जिसमें लोक सभा में एक पूछ धूप बनाने का अनुरोध किया गया था।

2. उस दिन अवृत् 28-7-1993 की मंत्रिपरिषद् में एक अविष्वाम प्रस्ताव पर हुए मतदान में, (राति 8.20 बजे) श्री राम लक्ष्मण सिह यादव तथा प्रत्येक सदस्यों ने प्रस्ताव के विषय में मतदान किया। 3. अग्रस्त, 1993 की संसदीय कार्य संसदीय कार्य का 3 अगस्त, 1993 का एक पत्र प्राप्त हुआ कि श्री राम लक्ष्मण मिह यादव तथा उन्हें अन्य सदस्य जिन्होंने लोक सभा में अलग बैठाये जाने का अनुरोध किया था, को कार्यस (आई) में सम्मिलित कर लिया गया है और यह कि उन्हें कार्यस (आई) ब्लाक में सीटें द्वारा बित्तित की जाएं।

इस संबंध में श्री अग्रिहि मिह की टिप्पणियाँ प्राप्त की गईं। श्री अग्रिहि मिह की टिप्पणियाँ और श्री राम लक्ष्मण सिह यादव और अन्य के निवेदन पर विचार करने के पश्चात् सभा में कार्य करने के प्रयोगजन के लिए उक्त 7 सदस्यों को जनता दल (अग्रिहि) की सीटों के ब्लाक में अलग सीटें देने का निर्णय किया गया।

3. यहाँ यह उल्लेख करना संगत हीगा कि श्री अग्रिहि मिह और कुछ अन्य सदस्यों ने आरोप लगाया था कि एक संसदीय और कुछ सदस्यों

द्वारा दिनांक 28 जूनाई, 1993 के अर्थवत पत्र के एक हस्ताक्षरकर्ता श्री गोविल चन्द्र मुंडा पर 28 जूनाई, 1993 को अधिकाराम प्रमाणव पर हुए मनदान के समय मनकार के पश्च में मनदान करने के लिए दबाव डाला गया था। इस गवध में मववित मर्ता और मदस्यों की टिप्पणियां प्राप्त की गई, इन्होंने इस मामले में उनके विरुद्ध साधा गए आरोपों का खुलासा किया। श्री मुंडा ने अपनी 29 जूनाई, 1993 के पत्र द्वारा दृष्टि किया कि उन्होंने प्रस्ताव के विरोध में श्वेषा में मनदान किया था इमते अन्तर्गत इस मामले में श्री मुंडा के बलबव का रिकाउं करने समय जब उनसे विशेषज्ञ से पूछा गया कि क्या किसी मदस्य या मदस्यों द्वारा उनके द्वारा दिए गए मत के मामले में उन पर दबाव डाला था तो उन्होंने इसका हुक्मापूर्वक खुलासा किया।

4. 12 अगस्त, 1993 को श्री राजनाथ गोविल शास्त्री, नंगद मदस्य, जो लोक ममा में उन्नान दाम (अर्जित) के लक्ष्यान्त मुख्य मनेकर्ता थे, ने विभिन्न सूचनाएँ श्री राम लक्ष्म गिरि यादव और पांच मदस्यों (श्री गोविल चन्द्र मुंडा को छोड़कर) ने 28 जूनाई, 1993 को अधिकाराम प्रस्ताव पर हुए मनदान के समय दिना पूर्व अनुसन्धि के पांच निवेशों के उन्नान वो मामले न हसरे का निर्णय किया है।

5. दिनांक 26 अगस्त, 1993 को श्री अग्नित सिंह ने मंत्रिधारा की अस्त्री अनुसूची और उसके अधोल बनाए गए नियमों के अनुसार उन दाम मत मदस्यों अधिकार भवित्वी राम लक्ष्म तिक यादव, राम शरण यादव, अमय प्रताप गिरि, रामन लाल, गनाम भोजम्पद था, अनादि अर्ण दाम और गोविल चन्द्र मुंडा के विरुद्ध एक मंत्रिधारा याचिका दाखिल की थी।

6. याचिकादाता ने दस्तील दो कि 7 में से 6 प्रत्यक्षियों अर्थात् सर्वश्री राम लक्ष्म मिह यादव, शम शरण यादव, अमय प्रताप गिरि, रामन लाल, गनाम मंत्रिधारा और अनादि अर्ण दाम ने 28 जूनाई, 1993 को अधिकाराम प्रस्ताव पर हुए मनदान के समय पांच के निवेशों के विरुद्ध मनदान किया। अतः दो वस्त्री अनुसूची के पैग 2(1) (ख) के अन्तर्गत निर्गत हो गए हैं।

7. अपने वैकल्पिक तरफ में याचिकादाता ने निवेदन किया कि चंद्रि 28 जूनाई, 1993 को प्रत्यक्षियों द्वारा अपग श्री बनाने हेतु अनुरोध के लिए शिवाय गया पत्र मूल राजनीतिक दल की मदस्यना को न्यायने के बगाबर है, अतः ये गात्र प्रत्यक्षी (श्री गोविल चन्द्र मुंडा सहित) दस्ती अनुसूची के पैग 2(1) (क) के अन्तर्गत निर्गत होनी चाही जाएं।

8. दबाव-बदल रासी, नियमों के अधीन याचिकादाता की प्राप्तियां प्रत्यक्षियों को उनको टिप्पणियां के लिए भेजी गई थीं। इस सर्वे में प्रभावितों द्वारा अपने लिखित अन्तों में सूच्य द्वारा से यह कहा गया था कि चंद्रि जनता दाम (अर्जित) से अलग होते का तिथि पहले ही ले चुके थे और ऐध मृण से दबाव-बदल हो चुका था तथा इस गुट में जो उसके कारण अस्तित्व में आया था, उसके ममा में जनता दाम (अर्जित) के तुम मदस्यों की संभावा के एक तिहाई से अधिक मदस्य थे, अतः उनको जनता दाम (अर्जित) की ओर से जारी विरुद्ध पर अपने दोनों की जमान नहीं थीं मता उनके लिए न तो यहां की प्राविष्टिका थीं और न ही वे इसको भावते के लिए बाध्य थे।

9. भान प्रत्यक्षियों की टिप्पणियों पर विचार करने के पश्चात् यह निर्णय लिया गया था कि इस महे पर सुनवाई की जाये। मामले से मंत्रिधारा पांचों को अपने मामलों की दूसरी दृष्टि पर अपने वकीलों के माध्यम से करने की अनुसन्धि ही गई थी। इस मामले की पहली सुनवाई 17 दिसम्बर, 1993 को हुई थी जिसमें याचिकादाता, प्रत्यक्षी तथा उनके वकीलों ने भाग लिया था तथापि 11 अप्रैल, 6 जून और 21 अगस्त, 1994 का हुई पञ्चात्की सुनवाईयों में न को याचिकादाता और न ही उनका वकील उपस्थित हुए थे।

10. मामले की सुनवाई के दौरान हुई कुछ पञ्चात्की घटनाओं के दौरे में यहां उल्लेख किया जा सकता है। 30 दिसम्बर, 1993 को श्री मंत्रिधारा ने नौ अन्य सदरयों ने वह सूचित

किया कि उन्होंने शायेस (आई) में विवर देने वा निर्णय लिया है। मामले की जांच करने के पश्चात् श्री अग्नि गिरि और अन्य मदस्यों को लोक ममा में कांग्रेस (आई) द्वारा की भाँड़ों में स्थान आवंटित किया गया थे तथा उन्हें कांग्रेस (आई) का मदस्य मान गया था।

11. एक अन्य घटना में यह हुआ कि जनता दल (अर्जित) के सामर्थ श्री उमेश नाथ वर्मा ने (एक) श्री अग्नि गिरि के स्थान पर श्री गम लक्ष्म मिह यादव और अन्य के विरुद्ध याचिका में याचिकादाता के हाथ में उनका नाम प्रतिस्थापित करने के लिए एक आवेदन किया (दो) श्री अग्नि गिरि नाम 9 अन्य मदस्यों, जिनका नामेस (आई) में विलप ही गया था, के विरुद्ध निर्गत हेतु एक गंभीर याचिका हो।

12. अतः 24 अगस्त, 1991 को हुई चौथी और अन्तिम सुनवाई (जिसमें न थी याचिकादाता अधिकृत हुआ था और न ही उनका वकील) के दौरान मदस्य मूदे के श्वलाचा एक अनिरिक्षण मुंडा भी विचारणार्थी ग्रामांशी प्रत्यक्षी अनुसूची के अन्तर्गत अनुसूची के अन्तर्गत दृष्टि देने वाले विवर नींवों पर वो उम्मेद वर्ते पी अनुमति है। जिनी नींवों पर दारा हस्तांक के लिए पर अन्यकों के वकील और विवर विवरण त धरने संबंधित तरफ (24-8-1991 को) और अपेक्षन विवरण (16-9-1994 को श्रद्धा) में देखा था कि निर्गत हेतु जिसी याचिका के गंवंध में दस्ती अनुसूची के अनुरोध एक बार कांग्रेसी श्रम दोनों पर कोई तीसरा पक्ष किसी प्रकार का हस्तांक नहीं कर सकता है।

13. इस मामले में भूज भूदा के संबंध म श्री मिलन ने वह निवेदन किया था कि उसके लाल ममा भी जनता दाम (अर्जित) विवाही दाम में ईध दल विभाजन हो जाका था और इस दल विभाजन के परिणाम-स्वरूप उत्तम गुट के मान प्रनार्थी जो लोक ममा में जनता दाम (अर्जित) की कुल मदस्य ममा के एक निहाई में अधिक मदस्य हैं, दस्ती अनुसूची के पैग 3 में विविध अपवाह के कारण उत्तम गुट के पैग 2 की पांचकों के अध्यधारा नहीं आते हैं।

14. 29 दिसम्बर, 1993 को याचिकादाता (श्री अर्जित गिरि), प्रत्यक्षी (श्री राम लक्ष्म मिह यादव तथा अन्य) तथा श्री उमेश नाथ वर्मा, संगद सदस्य की इस मामले में अन्तर्गत मुंडों पर अर्जी करने के लिए बलाचा गया था। ब्रेक के दौरान, याचिकादाता ने एक विवेदन वक्तव्य प्रस्तुत किया इसमें उसे गह दृष्टि द्वारा कि वह वह मामले को आगे बढ़ाना नहीं चाहता है। श्री उमेश नाथ दर्दी ने एक विवेदन वक्तव्य द्वारा किया जिसमें उसने बहा कि वह (एक) दो मामले में याचिकादाता के भूमि स्वप्नों नाम के परिस्थितान के लिए आवंत प्रार्थना पत्र तथा (दो) श्री अर्जित गिरि तथा 9 अन्य सदस्यों के विलाप निर्गत के लए संयुक्त याचिका पर जोर नहीं देता चाहता। श्री अग्नि गिरि तथा श्री उमेश नाथ वर्मा के उपरोक्त विवेदन वक्तव्य में द्वारा प्रतिश्वादारित की गई है।

15. श्री राम लक्ष्म मिह यादव तथा अन्य मदस्यों के विरुद्ध श्री अर्जित गिरि की गंभीर याचिका के संबंध म मामले पर विवाह के लिए मुद्दे मूदे के बाबा—

(एक) श्री राम लक्ष्म मि�ह यादव तथा अन्य प्रत्यक्षी (श्री जी. सी. मुंडा को छोड़कर) इस के निवेशों के विरुद्ध मदस्य में मनदान करने पर (जैसा कि याचिकादाता ने प्रपते अनुसूची के पैग 2(1)(ख) के अध्यान निर्गत हो गए हैं; अधिका—

(दो) मर्मी 7 प्रत्यक्षी अनग गुट के लिए अनुरोध करके, अपने मध्य राजनीतिक दल के मदस्यता व्येष्ठा में छोड़ देने के कारण (जैसा कि याचिकादाता ने प्रपते अनुसूची के पैग 2(1)(क) के अध्यान निर्गत हो गए हैं; अधिका—

16. असिंगिलिन माध्यम से इन्होंने कि प्रत्यर्थी मूल दल से छुला हो गए थे।

17. याचिकादाता ने विभिन्न रूप से कहा है कि याचिका की शर्तों बहुत में उत्तम रूचि नहीं है। अर्थात् अब याचिका जाना है कि प्रत्यर्थियों को सदस्यता समाप्त नहीं की जा सकती।

18. इन निष्कर्षों को छाना में रखते हुए कि प्रत्यर्थी मूल दल से प्रत्यर्थ हो गए थे, यह निर्णय करना आवश्यक नहीं है कि क्या श्री जी.सी. मुंडा ने मूल दल के संघेतक से विभिन्नताएँ निर्देश प्राप्त किए थे तथा यद्या उन्होंने किसी का उल्लंघन किया था। इस स्थिति को देखते हुए श्री जी.सी. मुंडा की सदस्यता समाप्त नहीं की जा सकती।

19. श्री उपेन्द्र नाथ वर्मा आहते थे कि उन्हें याचिकादाता के रूप में मामलों में पक्षकार बनाया जाए।

20. वह उस समय निष्पादिक प्राधिकारी के समक्ष उपस्थित नहीं हुए अब साथ असिंगिलिन किए जा रहे थे और वह बहस मुताजा रह रही थी। उक्तानि लिखित रूप में दिया है कि वह याचिकादाता के रूप में अपने को पक्षकार बनाये जाने भ सहित नहीं रखते। प्रत्यर्थियों को ग्रंथार से यह असिंगिलिन दिया गया कि ये वह रूप से थे और वर्मा को याचिकादाता के रूप में पक्षकार नहीं बनाया जा सकता।

21. श्री उपेन्द्र नाथ वर्मा द्वारा दिए गए इन आवेदन को छाना में रखते हुए, जिसमें उन्होंने कहा है कि वह अपने आपकी याचिकादाता के रूप में पक्षकार बनाये जाने पर जोर देने में रुचि नहीं रखते, इस बात का निर्णय करता आवश्यक नहीं है कि क्या उन्हें कठूनी रूप से याचिकादाता के रूप में पक्षकार बनाया जा सकता है।

22. श्री उपेन्द्र नाथ वर्मा द्वारा यह सिखाकर देने पर कि वह याचिकादाता मनमें रुचि नहीं रखते, श्री उपेन्द्र नाथ वर्मा का याचिकादाता जनने या मामला नहीं गनता है।

आदेश

23. अतः याचिका का निपटान निन्त तरीके से किया जाना है:

(एक) याचिका आविष्कार की जारी है।

(दो) प्रत्यर्थी निररूपता के घट्टर्वान नहीं है।

(तीन) श्री जी.सी. मुंडा की सदस्यता समाप्त नहीं की जारी है।

(चार) श्री उपेन्द्र नाथ वर्मा के आवेदन का निपटान उनके द्वारा आवेदन को छाना में रखकार किया जाता है, जिसमें उक्तानि कहा है कि वह याचिकादाता के रूप में अपने आपको पक्षकार नहीं बनाता आहते हैं।

(पांच) इस मामले को भास्तव किया जाता है।

(छह) विधि और नियमों के अनुसार प्रत्यय आवश्यक कदम उठाए जा रहते हैं।

इ.

नहीं दिल्ली:

दिनांक: 3 अक्टूबर, 1996

(शिवराज वी. पाटिल)

प्रधान शोक समूह

[मा. 46/2(2)/93/द]

ह.०
मुख्यमित्र, लोकसभा

LOK SABHA SECRETARIAT

NOTIFICATION

New Delhi, the 22nd January, 1996

S.O. 65(E).—The following Decision dated 3 January, 1996, of the Speaker, Lok Sabha, given under the Tenth Schedule to the Constitution of India is hereby notified:—

"BEFORE HONOURABLE SPEAKER, LOK SABHA

Shri Ajit Singh

Petitioner

versus

1. Shri Ram Lakhan Singh Yadav
2. Shri Ram Sharan Yadav
3. Shri Abhay Pratap Singh
4. Shri Roshan Lal
5. Shri Gulam Mohammad Khan
6. Shri Anadi Charan Das
7. Shri Govind Chandra Munda

Respondents

Petition under Para 2(i)(b) or in the alternative under para No. 2(i)(a) of the Tenth Schedule of the Constitution of India for a decision that the aforesaid Respondents are disqualified for being Members of the House of People (Lok Sabha) on the ground that they had violated the whip duly served on them directing them to vote in favour of the No Confidence Motion on 28th July, 1993 or in the alternative on the ground that they voluntarily gave up the membership of the Janata Dal (A) of which they were the Members.

1. On 1st June, 1993 it was decided in the Janata Dal case, that Janata Dal (A) consisting of 20 Members with Shri Ajit Singh as its Leader came into existence. Subsequently on 28th July 1995 (at 16.15 Hrs.) Shri Ram Lakhan Singh Yadav handed over a letter of the same date signed by him and 6 other Members belonging to Janata Dal (A) viz. Sarvashri Roshan Lal, Abhay Pratap Singh, Govinda Chandra Munda, Ram Sharan Yadav, Anadi Charan Das and Gulam Mohammad Khan requesting for separate group in Lok Sabha.

2. On that day i.e. 28-7-1993, at the voting on a motion of No Confidence in the Council of Ministers (held at 20.20 Hrs.), Shri Ram Lakhan Singh Yadav and the said six other members voted against the motion. On 3rd August 1993, a letter dated 2nd August 1993 was received from the Minister of Parliamentary Affairs informing that Shri Ram Lakhan Singh Yadav and six others who had made a request to be seated separately in Lok Sabha had been admitted to Congress (I) and that they be allotted seats in Congress (I) Block of seats. Comments in this respect were obtained from Ajit Singh. After considering the comments of Shri Ajit Singh and further submissions by Shri Ram Lakhan Singh Yadav and others, it was decided to seat the said 7 members separately outside the Janata Dal (A) Block of seats in Lok Sabha for the purpose of functioning in the House.

3. It may be pertinent to mention that there were allegations by Shri Ajit Singh and some other Members that Shri Govinda Chandra Munda, one of the signatories to the above letter dated 28th July 1993, was pressurised by a Minister and some Members to correct his vote to 'No' in favour of the Government at the time of voting on the No Confidence Motion held on 28th July 1993. Comments in this respect were obtained from the Minister and the Members concerned who had denied the respective allegations made against them in the matter. Shri Munda in his letter dated 29th July 1993 intimated that he had voted against the motion of his free will. Besides, at the time of recording a statement in the matter, when Shri Munda was asked specifically if any Member or Members or Minister or Ministers had brought any kind of pressure on him in the matter of vote cast by him, he emphatically denied the same.

4. On 12 August 1993, Shri Rajnath Sonker Shastri, M.P., the then Chief Whip of Janata Dal (A) Legislative Party in Lok Sabha intimated in writing that Shri Ram Lakhan Singh Yadav and five other Members (excluding Shri G. C. Munda)

had voted contrary to the party directive without prior permission, at the time of voting on the No Confidence Motion held on 28th July 1993 and that the party had decided not to condone the violation of the party directive by the said members.

5. On 26 August 1993, Shri Ajit Singh filed a composite petition under the Tenth Schedule to the Constitution and the rules made thereunder against the said seven members viz, Sarvashri Ram Lakhan Singh Yadav, Rani Sharan Yadav, Abhay Pratap Singh, Rohan Lal, Gulam Mohammad Khan, Anadi Charan Das and Govinda Chandra Munda.

6. The petitioner contended that 6 out of the 7 Respondents viz, Sarvashri Ram Lakhan Singh Yadav, Rani Sharan Yadav, Abhay Pratap Singh, Rohan Lal, Gulam Mohammad Khan and Anadi Charan Das, at the time of voting on the motion of No Confidence held on 28th July, 1993 voted contrary to the party directives and hence had become subject to disqualification under para 2(1) (b) of the Tenth Schedule.

7. In his alternative plea, the petitioner submitted that since the letter written by the Respondents on 28th July 1993 requesting for a separate group amounted to giving up the membership of the original political party, the seven respondents (including Shri G. C. Munda) had become liable to be declared disqualified under para 2(1)(a) of the Tenth Schedule.

8. Copies of the petition were forwarded to the respondents for their comments as required under the Anti Defection Rules. The main stand of the respondents in their written statements in this respect was that since they had already decided to split from Janata Dal (A) and a valid split had taken place and the faction, which arose pursuant thereto, was more than 1/3rd of the total members of the Janata Dal (A) in the Lok Sabha, there was no occasion for them to take notice of the whip issued to them by Janata Dal (A) and they were neither required nor obligated to obey the whip.

9. After considering the comments of the 7 respondents, it was decided to hold hearings in the matter. The parties to the case were allowed to plead their case themselves as well as through their counsels. The first hearing in the case was held on 17th December, 1993 which was attended by the petitioner, respondents and their counsels. However, during the subsequent hearings held on 11th April, 6th June and 24th August, 1994 neither the petitioner nor his Counsel was present.

10. Mention may be made here of some subsequent developments which took place while the hearings in the case were in progress. On 30th December, 1993, Shri Ajit Singh and 9 other Members of Janata Dal (A) informed that they had decided to merge with Congress (I). After examining the matter, seats were allotted to Shri Ajit Singh and others in Congress (I) block of seats in Lok Sabha and they were treated as Members of Congress (I).

11. In another development, Shri Upendra Nath Verma, MP, belonging to Janata Dal (A) filed (i) an application to substitute his name as petitioner in the petition against Shri Ram Lakhan Singh Yadav and others in place of Shri Ajit Singh; (ii) composite petition for disqualification against Shri Ajit Singh and 9 other members who had merged with Congress (I).

12. Hence during the fourth and final hearing held on 24th August, 1994 (which was also not attended either by the Petitioner or by his Counsel) apart from the main issues, another additional issue emerged for consideration viz. is it permissible for a third party to intervene in the proceedings before the Speaker in respect of a petition for disqualification

under the Tenth Schedule. Shri Kapil Sibal, Counsel for the respondents in his oral arguments (on 24th August, 1994) and written submissions (received on 16th September, 1994), on the issue of intervention by a third party, submitted that once the proceedings under the Tenth Schedule in respect of a petition for disqualification are set in motion, there is no scope for any intervention by a third party.

13. As regards the main issue in the case, Shri Sibal had submitted that since a valid split had taken place in the Janata Dal (A) Legislature Party in the Lok Sabha and the 7 Respondents comprising the faction which arose pursuant thereto, constitute more than 1/3rd of the total strength of the Janata Dal (A) in Lok Sabha, they are not subject to the rigours of para 2 of the Tenth Schedule, being within the exception set out in para 3 of the said Schedule.

14. On 29th November, 1995, the Petitioner (Shri Ajit Singh), the Respondent (Shri Ram Lakhan Singh Yadav and others) and Shri Upendra Nath Verma, MP were called to discuss the matters involved in the case. During the meeting, the petitioner submitted a written statement stating that he did not wish to pursue the case. Shri Upendra Nath Verma also filed a written statement stating that he does not wish to press his (i) application for substitution of his name as petitioner in this case and (ii) composite petition for disqualification against Shri Ajit Singh and 9 other members. The said written statements by Shri Ajit Singh and Shri Upendra Nath Verma were countersigned by me.

15. The main issue for consideration in the case in respect of composite petition by Shri Ajit Singh against Shri Ram Lakhan Singh Yadav and other Members is whether :

- (i) Shri Ram Lakhan Singh Yadav and 5 other respondents (excluding Shri G. C. Munda) have incurred disqualification under para 2(1)(b) of the Tenth Schedule for voting in the House contrary to the party directive (as prayed by the petitioner in his main plea); or
- (ii) All the 7 respondents by making a request for separate group have incurred disqualification under para 2(1)(a) of the Tenth Schedule for voluntarily giving up membership of their original political party (as prayed by petitioner in his alternative plea).

16. The evidence that has come on record shows that the respondents had split from the original party.

17. The petitioner had stated in writing that he is not interested in pursuing the petition. Hence, it is held that the membership of the respondents cannot be terminated.

18. In view of the findings that the respondents had split from the original party, it is not necessary to decide if Shri G. C. Munda had validly received the directions from the whip of the original party and if he had violated the whip. In view of this position, the membership of Shri G. C. Munda cannot be terminated.

19. Shri Upendra Nath Verma wanted to be impleaded in the matter as the Petitioner.

20. He did not appear before the deciding authority, at the time when the evidence was recorded or when the arguments were heard. He has given in writing that he is not interested in getting himself impleaded as the Petitioner. On behalf of the respondents, it was pleaded that legally also, Shri Verma could not be impleaded as petitioner.

21. In view of the application given by Shri Upendra Nath Verma saying that he is not interested in pressing for getting himself impleaded as the Petitioner, it is not necessary to decide whether he can be impleaded as the petitioner, legally.

22. The matter of Shri Upendra Nath Verma's becoming the petitioner does not survive after his giving in writing that he is not interested in becoming the petitioner.

ORDER

23. Therefore, the petition is disposed of as follows:

- (i) The Petition is dismissed;
- (ii) The Respondents are not subject to disqualification;
- (iii) Membership of Shri G. C. Munda is not terminated;

(iv) The application of Shri Upendra Nath Verma is disposed of in terms of his second application which states that he is not interested in getting himself impleaded as the petitioner;

(v) The case is closed;

(vi) Other necessary steps may be taken in terms of the law and the rules.

New Delhi,

Dated, the 3rd January, 1996

Sd./-

(SHIVRAJ V. PATIL),
Speaker, Lok Sabha"

[No. 46/2(2)/93/T]

S. N. MISHRA, Secy.-Genl

